के रूप में देखने लगा है। लगता है ऐसे ही प्रसंगों के आधार पर विद्वानों के एक वर्ग ने इन्हें शृंगारिक कवि के रूप में खड़ा कर दिया है।

शृंगार इनके काव्य का एक पक्ष है। इसका सशक्त पक्ष है भक्ति। इन्होंने परम्परा का पालन करते हुए अपनी कविता में दशावतार का वर्णन किया है। दुर्गा, शिव, विष्णु, गंगा तथा अन्य देवताओं के भक्तिपरक पद विद्यापति के काव्य की एक बड़ी विशेषता है। भगवान विष्णु की प्रार्थना करते हुए कवि कहता है - "माधव कत तोर करब बड़ाई
उपमा तोहर कहब कैकरा हम कहतहुँ अधिक लजाई।"

जीवन के निराशाभरे क्षणों में वे प्रार्थना करते हैं -
'माधव हम परिनाम निराशा'। इसी प्रकार दुर्गा की अभ्यर्थना भी कवि अपने अन्तर्मन से करता है -

जय-जय भैरवी असुर भयावनी
" पशुपति भामिनी माया।
सहज-सुमति वर दियउ गोसाउनि
अनुगति गति तुअ पाया।।"

माँ गंगा के प्रति उनकी बड़ी आस्था है इसीलिए वे चातुर्मास में गंगा सेवन करते थे। गंगा के प्रति उनके उद्गार अत्यन्त सहज, स्वाभाविक एवं ~~हृदय के~~ मर्मस्पर्शी हैं - बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे
छाड़इत निकट नयन बह नीरे।
करजोरि बिनमओं विमलतरंगे
पुनि दरसन होए पुनमति गंगे।

भगवान शिव के तो ये परम भक्त ही थे। शिव के सम्बन्ध में इन्होंने सर्वाधिक पद लिखे हैं। शिव इनके आराध्य ही नहीं भवताप के हर्ता भी हैं। वे अपना सुख-दुख उन्हीं से निवेदित करते हैं -

कखन हरब दुख मोर हे भोलानाथ
दुखही जनम लेल दुखही गमाएब
हमर दुखक नहीं ओर हे भोलानाथ
कखन हरब दुख मोर।

कहा तो यहाँ तक जाता है कि इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर शिव स्वयं इनके सेवक के रूप में इनके घर में निवास करते थे। उगना नामधारी शिव के वियोग में कवि ने अनेक पदों की रचना की थी —

'उगना रे मोरा कतये गेला'। विद्यापति ने उगना के प्रति सम्पूर्ण समर्पण का भाव दिखाया है। एक पद में वे कहते हैं कि जो उगना का पता देगा उसे वे सोने का कंगना तक देने के लिए तैयार हैं।

कहने का तात्पर्य यह कि विद्यापति ने केवल श्रृंगार ही नहीं भक्ति में इस कदर पद लिखे हैं। इन पदों की सबसे बड़ी विशेषता है कि इनमें भक्ति का भाव आरोपित नहीं लगता वरन सहज, स्वाभाविक एवं रागानुगा आवेग से पूर्ण हैं।

श्रृंगार एवं भक्ति के अतिरिक्त कवि विद्यापति ने मिथिलांचल के समस्त लोकाचार के अनुकूल गीत लिखे हैं। तीज-त्योहारों के अनुकूल चाहे वैवाहिक रस्म-रस्मा कि मड़वा-छवाइन, हल्दी, कोहबर, इत्यादि के अवसर पर गाए जाने वाले पद लिखे हैं। मुंडन, जनेऊ, बारहमासा तक को इन पदों में स्थान मिला है। ये पद इतने लोकप्रिय हैं कि आज तक मिथिलांचल में इन अवसरों पर उनके पदों का गाया जाना अनिवार्य समझा जाता है। मिथिला की अमराइयों में विद्यापति के पद आज भी गूंज रहे हैं। मेरी मान्यता है कि जो कवि जन-चेतना में जितनी गहराई में उतर जाता है वह उतना ही न केवल लोकप्रिय होकर हो जाता है वरन उसकी कविता उतनी ही दीर्घजीवी भी होती है। इस दृष्टि से तुलसी, कबीर और विद्यापति अप्रतिम हैं।

विद्यापति के मूल्यांकन के क्रम में हमें सचेत रहने की आवश्यकता है। किसी एक पक्ष के आधार पर हमें किसी भी अतिवादी निष्कर्ष से

बनाने की आवश्यकता है। विद्यापति वस्तुतः समग्र मानवीय जीवन के कवि हैं जिसमें शृंगार का रस है वहीं भक्ति की गंगा भी है इसी के साथ लोक-चेतना को रेखांकित करने वाली स्नेह विगलित भावनाएं भी हैं। इसी क्षमता ने विद्यापति को आज तक प्रासंगिक बनाए रखा है। हिन्दी साहित्य विद्यापति जैसे साहित्यकारों के कारण ही वन्दनीय और पठनीय बना हुआ है।